वैकुण्ठ इन्द्रः। इन्द्रः। जगती, २, ११ त्रिष्टुप्

**अहं दां गृणते पूर्व्यं वस्वहं ब्रह्म कृणवं मह्यं वर्धनम्।**
**अहं भुवं यजमानस्य चोदितायज्वनः साक्षि विश्वस्मिन्भरे॥ १०.०४९.०१**

अहम्। गृणते- स्तुवते। पूर्व्यं- प्राचीनाम्। वसु- सम्पदम्। दाम्- अदाम्। अहम्। ब्रह्म। मह्यम्- मे। वर्धनम्- वृद्धिम्। कृणवम्- करोमि। अहम्। यजमानस्य- उपासकस्य दातुर्वा। चोदिता- प्रचोदकः। भुवम्- अभवम्। अयज्वनः- अदातॄन्। विश्वस्मिन् भरे- सर्वस्मिन् निर्वाहे। साक्षि- अभिभवामि ॥१॥

**मां धुरिन्द्रं नाम देवता दिवश्च ग्मश्चापां च जन्तवः।**
**अहं हरी वृषणा विव्रता रघू अहं वज्रं शवसे धृष्णवा ददे॥ १०.०४९.०२**

दिवश्च- द्युलोकस्य च। ग्मश्च- भूलोकस्य च। अपां च- अन्तरिक्षस्य च मध्ये। जन्तवः- जीवाः। माम्। इन्द्रम्- ईशनाधिदैवतम्। देवता- देवतात्त्वेन। धुः- दधुः। अहम्। वृषणा- वर्षकौ। विव्रता- विशेषधर्मसम्पन्नौ। रघू- लघू। हरी- आकर्षणशक्तिप्रतीकाश्वौ योजयामि। अहम्। धृष्णु- धर्षकम्। वज्रम्। शवसे- बलाय। आ ददे- गृह्णामि ॥२॥

**अहमत्कं कवये शिश्नथं हथैरहं कुत्समावमाभिरूतिभिः।**
**अहं शुष्णस्य श्नथिता वधर्यमं न यो रर आर्यं नाम दस्यवे॥ १०.०४९.०३**

अहम्। कवये- सूक्ष्मदर्शिने। अत्कम्- आवरणमाच्छादकम्। हथैः- हननसाधनैः। शिश्नथम्- बाधितवान्। अहम्। कुत्सम्- कर्मशीलम्। कुत्सा एते हर्यश्वाय शूषमिति श्रुतावेवमेव दृश्यते। ऊतिभिः- रक्षाशक्तिभिः। आवम्- रक्षितवान्। अहम्। शुष्णस्य- शोषकस्य। श्नतिथा- बाधकः। वधः- हननसाधनम्। यमम्- नियमितवानस्मि। आर्यं नाम- आर्यसंबन्धि देयम्। दस्यवे- चोरायोपक्षपयित्रे। न ररे- न ददामि ॥३॥

**अहं पितेव वेतसूँरभिष्टये तुग्रं कुत्साय स्मदिभं च रन्धयम्।**

Dr. Rangani

**अहं भुवं यजमानस्य राजनि प्र यद्भरे तुजये न प्रियाधृषे॥ १०.०४९.०४**

अहम्। पितेव- जनक इव। वेतसून्- भौमभोगान्। वेतसुर्वृक्षविशेषो वनस्पतिर्भौमभोगप्रतीकः। अभिष्टये- इच्छते। कुत्साय- कर्मशीलाय। कुत्सा एते हर्यश्वाय शूषमिति श्रुतावेवमेव दृश्यते। तुग्रम्- तेजः। तुग्रशब्दो रश्मिनामसु पठितः। स्मदिभम्- शोभनगतिम्। सुमदिभम्। इण् गतौ। सुतरां मादयतीति सुमत्। मदि कान्तौ। मद स्तुतौ। मद मोदने। च। रन्धयम्- पक्वं कृतवान्। संसिद्धिः। रध हिंसासंराध्योः। यजमानस्य- उपासकस्य। राजनि- रञ्जने। अहम्। भुवम्- भवामि। तुजये न- पुत्रवत्स्थिताय यजमानाय। आधृषे- वृत्रधर्षणाय च। प्रिया- प्रियाणि। प्र- प्रकर्षेण। भरे- भरामि ॥४॥

**अहं रन्धयं मृगयं श्रुतर्वणे यन्माजिहीत वयुना चनानुषक्।**

**अहं वेशं नम्रमायवेऽकरमहं सव्याय पङ्गृभिमरन्धयम्॥ १०.०४९.०५**

यत्- यदा। मा- माम्। अजिहीत- अगच्छत्। ओहाङ् गतौ। वयुना- प्रज्ञानेन। आनुषक्- अनुषक्तश्च अभवत्। तदा। श्रुतर्वणे- श्रुतार्वणे श्रुताश्वायोपासितप्राणायेति भावः। मृगयम्- मृगयापरं रक्षः। अहम्। रन्धयम्- बाधितवान्। आयवे- मनुष्यहिताय। अहम्। वेशम्- सदनम्। नम्रम्- प्रह्वम्। अकरम्- अकरवम्। अहम्। सव्याय- सत्प्रेरकाय। सू प्रेरणे। सत्स्रष्ट्रे। सूते इति सव्यः। षड्गृभिम्- बहुग्रहम्। अरन्धयम्- बाधितवान् ॥५॥

**अहं स यो नववास्त्वं बृहद्रथं सं वृत्रेव दासं वृत्रहारुजम्।**

**यद्वर्धयन्तं प्रथयन्तमानुषग्दूरे पारे रजसो रोचनाकरम्॥ १०.०४९.०६**

यः। वृत्रहा- आवरणबाधकः। सोऽहम्। वृत्रेव दासम्- विषयानां दासमावरणमिव। नववास्त्वम्- नववासस्थानसहितम्। बृहद्रथम्। सम्- सम्यक्। अरुजम्- भग्नं कृतवान्। वर्धयन्तम्- वर्धमानम्। प्रथयन्तम्- स्वमेव ख्यापयन्तं शत्रुम्। आनुषक्- अनुषक्तः सन्। रोचना रजसः- द्युलोकस्य। दूरे पारे। अकरम्- कृतवान् ॥६॥

**अहं सूर्यस्य परि याम्याशुभिः प्रैतशेभिर्वहमान ओजसा।**

**यन्मा सावो मनुष आह निर्णिज ऋधक्कृषे दासं कृत्व्यं हथैः॥ १०.०४९.०७**

Dr. Rangani

अहम्। सूर्यस्य- आत्मसूर्यस्य। आशुभिः- क्षिप्रैः। एतशेभिः- प्राणाश्वैः। ओजसा- तेजसा। वहमानः। परि यामि- परितो गच्छामि। यत्- यदा। मा- माम्। मनुषः- उपासकस्य। सावः- रसनिष्पत्तिः। आह- स्तौति। तदा। निर्णिजे- सद्भावनारूपप्रकाशाय। हथैः- हननसाधनैः। कृत्व्यम्- कर्तव्यं हन्तव्यमिति भावः। दासम्- विषयाणां दासत्त्वम्। ऋधक्कृषे- उपासकचित्ततः पृथक्करोमि ॥७॥

**अहं सप्तहा नहुषो नहुष्टरः प्राश्रावयं शवसा तुर्वशं यदुम्।**
**अहं न्य१न्यं सहसा सहस्करं नव व्राधतो नवतिं च वक्षयम्॥ १०.०४९.०८**

अहम्। सप्तहा- सप्तभूमिकावरणबाधकः। नहुषो नहुष्टरः- पुरुषोत्तमः। नहुषशब्दो मनुष्यनामसु पठितः। शवसा- बलेन। तुर्वशम्- क्षिप्रकारिणम्। यदुम्- याज्ञिकम्। यजते इति यदुरिति शब्दकल्पद्रुमे। नियतं वा। यम उपरमे। प्र- प्रकर्षेण। अश्रावयम्- कीर्तिमन्तमकरवम्। अन्यम्- वृत्रेतरमुपासकम्। अहम्। सहसा- स्वशक्त्या। सहस्करम्- शक्तिमन्तमकरवम्। नव नवतिम्- प्रभूताः। व्राधतः- वर्धमानाः शक्तीः। च। वक्षयम्- अवहम् ॥८॥

**अहं सप्त स्रवतो धारयं वृषा द्रविल्वः पृथिव्यां सीरा अधि।**
**अहमर्णांसि वि तिरामि सुक्रतुर्युधा विदं मनवे गातुमिष्टये॥ १०.०४९.०९**

अहम्। स्रवतः- स्रवतीः। द्रविल्वः- द्रवणशीलाः। सीराः- सरणशीलाः। सप्त- भूर्भुवरादिसप्तभूमिकाशक्तिधाराः। पृथिव्या अधि- भूम्या उपरि। धारयम्- अधारयम्। सुक्रतुः- शोभनप्रज्ञः सन्। अहम्। अर्णांसि- शक्तिधाराः। वि- विशेषेण। तिरामि- प्रयच्छामि। युधा- वृत्रयुद्धेन। मनवे- मनुष्याय। इष्टये- अभीष्टये। गातुम्- मार्गम्। विदम्- लेभे ॥९॥

**अहं तदासु धारयं यदासु न देवश्चन त्वष्टाधारयद्रुशत्।**
**स्पार्हं गवामूधस्सु वक्षणास्वा मधोर्मधु श्वात्र्यं सोममाशिरम्॥ १०.०४९.१०**

यत्- यं रसम्। रुशत्- दीप्तम्। आसु- गोषूदकेषु च। त्वष्टा। चन- च। न अधारयत्- न दधार। तत्। अहम्। धारयम्- अधारयम्। गवामूधःसु- चिद्रश्मिषु। वक्षणासु- अप्सु मूलशक्तिधारासु।

Dr. Ranganji

स्पार्हं- स्पृहणीयम्। मधोर्मधु- अतिशयेन मधुरम्। श्वत्र्यम्- क्षिप्रम्। सोमम्- रसम्। आशिरम्- अधारयम्॥१०॥

**एवा देवाँ इन्द्रो विव्ये नॄन्प्र च्यौत्नेन मघवा सत्यराधाः।**
**विश्वेत्ता ते हरिवः शचीवोऽभि तुरासः स्वयशो गृणन्ति॥ १०.०४९.११**

एव- एवम्। देवान्- अमर्त्यान्। नॄन्- मर्त्यान्। सत्यराधः- अवितथसिद्धियुक्तः। इन्द्रः- परमेश्वरः। च्यौत्नेन- स्वबलेन। प्र- प्रकर्षेण। विव्ये- गमयति। हरिवः- आकर्षणशक्तिप्रतीकाश्वयुक्त। शचीवः- प्रज्ञावन्। स्वयशः- इतरानपेक्षकीर्तियुक्त। ता विश्वा- तानि सर्वाणि। ते- तव कर्माणि।तुरासः- तव प्रपत्तौ त्वरमाणाः। अभि गृणन्ति- अभिष्टुवन्ति॥११॥

Dr. Rangaraji